डॉ. पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर = 416004

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध=प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 29 JUN 1999

(डॉ. पांडुरंग पाटील)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

डॉ. शिवाजी विष्णु निकम
एम्. ए. पीएच्. डी.
स्नातोकोत्तर अध्यापक, हिंदी विभाग,
सदगुरू गाडगे महाराज महाविद्यालय,
कराड, जि. सातारा.

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. सुनिल बापूसाहेब बेंद्रे ने मेरे निर्देशन में ''सूर्यबाला की कहानियों का अनुशीलन'' लघु शोध-प्रबंध; शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध-छात्र ने मेरे सुझावों को पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्र के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 29 JUN 1999

शोध निर्देशक
(डॉ. शिवाजी विष्णु निकम)

प्रख्यापन

''सूर्यबाला की कहानियों का अनुशीलन'' लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 29 JUN 1999

शोध-छात्र

(श्री. सुनिल बापूसाहेब बेंद्रे)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

विषय चयन की प्रेरणा :-

मुझे बचपन से ही कहानियाँ पढ़ने, सुनने का शौक रहा। इसी कारण जब बी.ए. तथा एम्.ए. में किसी भी साहित्यकार की कोई कहानी मैं पढ़ता था तब उस साहित्यकार की अन्य सभी रचनाएँ पढ़ने की उत्सुकता मेरे मन में जागृत हो जाती थी। इसी कहानी पढ़ने की रूचि ने मुझे पत्रिकाएँ पढ़ने का भी आदि बना दिया। एक बार मैंने 'धर्मयुग' पत्रिका में सूर्यबाला जी की एक कहानी पढ़ ली जो नारी जीवन से संबंध रखती थी, नारी के अंतर्मन को अत्यंत गहराई से उस कहानी में नापा गया, यह देखकर इस कहानी ने मुझे काफी हदतक प्रभावित किया और सूर्यबाला जी की अन्य कहानियाँ पढ़ने की उत्सुकता मेरे मन में जागृत हुई। मैंने जब सूर्यबाला जी की सभी कहानियाँ पढ़ ली तब मेरे मन में इस संदर्भ में शोध करने की इच्छा हुई और मैंने अपने शोध-निर्देशक डॉ. शिवाजी निकम जी से पूछा कि क्या मैं इस विषय में अपना लघुशोध प्रबंध लिख सकता हूँ ? तो उन्होंने मुझे सहर्ष स्वीकृति दे दी।

विषय चयन का महत्व -

सबसे पहले मेरे सामने यह सवाल खड़ा हो गया कि क्या अब तक अन्य किसी विद्वान ने इसपर शोधकार्य किया है ? इसकी खोज-बीन करने से ज्ञात हुआ कि बनारस विश्वविद्यालय के अंतर्गत नीरा गंगवार जी ने "सूर्यबाला के साहित्य का अनुशीलन" इस विषय पर शोधकार्य किया है। तथा उनके कहानियों पर अभीतक कोई कार्य नहीं हुआ है। तब मैंने "सूर्यबाला की कहानियों का अनुशीलन" विषय एम्.फील्. के लिए चुना।

साठोत्तर काल की महत्वपूर्ण महिला लेखिकाओं में सूर्यबाला जी का स्थान महत्वपूर्ण है। आधुनिक काल के मध्यवर्गीय इन्सानों की समस्याओं का अंकन, नारी समस्याओं का अंकन, नारी मन को खोलना, बुजुर्गों की उपेक्षा आदि अनेकानेक पारिवारिक जीवन के पहलूओं को अंकित करनेवाली सूर्यबाला जी सिर्फ कहानियों के कारण ही नहीं, अपने व्यंग्य साहित्य एवं उपन्यासों के कारण भी साहित्य-जगत् में अपना नाम ऊँचाई तक ले जा चुकी है। फिर भी उन्हें उनकी कहानियों के कारण ही अधिक पहचाना जाता है। इसी कारण

मैंने उनकी कहानियों को ही अपने अध्ययन का केंद्र बनाया और 'सूर्यबाला की कहानियों का अनुशीलन" इस विषय पर लघुशोध प्रबंध लिखने के लिए शुरूआत की।

जब मैंने "सूर्यबाला की कहानियों का अनुशीलन" इस विषय पर शोध करना शुरू किया तो मेरे सामने निम्नलिखित सवाल खड़े हो गये -

1) क्या सूर्यबाला जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर परिणाम हुआ है ?

2) सूर्यबाला के कहानियों की वस्तुगत विशेषताएँ कौन-सी है ?

3) सूर्यबाला के कहानियों की चरित्रगत विशेषताएँ क्या है ?

4) सूर्यबाला जी ने अपनी कहानियों का परिवेश कैसे अंकित किया है ?

5) सूर्यबाला जी की कहानियों का शिल्प कैसा है ?

इन सभी सवालों का जवाब प्राप्त करने का प्रयास ही मेरा लघुशोध-प्रबंध है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु-शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय - "सूर्यबाला : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।"

इस अध्याय में सूर्यबाला जी के व्यक्तित्व को जन्म तथा बचपन, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा, परिवार, अर्थोपार्जन, बाह्य व्यक्तित्व, आंतरिक व्यक्तित्व (मिलनसार, अतिथ्यशील, संवेदनशील, भावुक, हँसमुख), रूचियाँ, साहित्यिक प्रेरणा, पुरस्कार आदि विभागों में विभाजित किया। सूर्यबाला जी के कृतित्व के अंतर्गत उनके उपन्यास, कहानी संग्रह, व्यंग्य संग्रह, अन्य साहित्य का परिचय प्रस्तुत कर अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय - "सूर्यबाला की कहानियों का वस्तुगत अध्ययन।"

इस अध्याय में प्रारंभ में कहानियों में वस्तु तत्व का महत्व, घटना विन्यास की दृष्टि से कहानी की वस्तु के लिए आवश्यक तत्व आदि की सैद्धांतिक विवेचना प्रस्तुत कर सूर्यबाला जी की कहानियों में वस्तु तत्व को जाँचने के लिए उनके कहानी संग्रह थाली भर चाँद, मुंडेर पर, यामिनी कथा, गृह प्रवेश, साँझवाती की एक-एक कहानी की विवेचना प्रस्तुत कर दी गयी है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय - "सूर्यबाला की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन।"

इस अध्याय में चरित्र चित्रण का स्वरूप, कहानी की पात्र-योजना, कहानी में चरित्र चित्रण का महत्व इन बातों को सैद्धांतिक दृष्टि से प्रस्तुत करने के पश्चात् सूर्यबाला की कहानियों के पात्रों की विशेषताएँ जैसे स्वार्थ, अकेलापन, उपेक्षा, हँसमुख, खिलाडू वृत्ति, भयग्रस्त या आतंकित, नीडर, साहसी, स्वाभिमान, दृढ़ या निग्रही, विवशता, हीनता बोध, बेफिक्रीर वृत्ति आदि को लेकर सूर्यबाला की कहानियों के पात्रों का चरित्र-चित्रण किया गया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय - "सूर्यबाला की कहानियों का परिवेशगत अध्ययन।"

इस अध्याय में परिवेश का साहित्य में महत्व आदि की सैद्धांतिक जानकारी देते हुए सूर्यबाला की कहानियों में चित्रित परिवेश के अंतर्गत-मध्यवर्गीय परिवार, पारिवारिक माहौल, श्रद्धास्थानों, आधुनिक सभ्यता का प्रतीक क्लब-पार्टीयों, शहरी जीवन, गाँव का जीवन आदि को परखा गया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय - "सूर्यबाला की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन।"

इस अध्याय में शिल्प का स्वरूप, शिल्प संबंधी कुछ विद्वानों के विचार, शिल्प की अनिवार्यता आदि की सैद्धांतिक विवेचना कर फिर कथावस्तु, पात्र चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देश-काल तथा वातावरण, भाषाशैली और उद्देश्य इन तत्वों के आधार पर सूर्यबाला के कहानियों के शिल्प को जाँचा गया और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

उपसंहार -

सभी अध्यायों को निचोड़ या सार अंत में उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। और अंत में मैंने 'संदर्भ-ग्रंथ' सूची दे दी है।

उपलब्धियाँ -

पूरे लघु शोध प्रबंध के अध्ययन के पश्चात् निम्नलिखित उपलब्धियाँ मेरे हाथ लगी हैं।

* सूर्यबाला जी का समग्र व्यक्तित्व उनके साहित्य में साफ झलकता है।
* सूर्यबाला जी ने अपने अनुभव पर आधृत रचनाओं का निर्माण अधिक किया है।

* अपने मध्यवर्गीय जीवन का असर उनकी कहानियों पर दिखाई देता है।
* संक्षिप्त कथानक, उचित पात्र योजना, आकर्षक आरंभ, कौतुहल वर्धकता, आरंभ, विकास, चरमसीमा और अंत सूर्यबाला की कहानियों की वस्तुगत विशेषताएँ हैं।
* पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, सीमित पात्र संख्या, पात्रों का अंकन परिस्थिति अनुकूल, स्वाभावानुकूल, भाषा का उचित प्रयोग आदि सूर्यबाला के कहानियों की चरित्रगत विशेषताएँ दिखाई देती है।
* कहानी के तत्त्वों में से सिर्फ एक देश-काल तथा वातावरण के अंकन की असफलता को छोड़कर शिल्प की दृष्टि से सभी कहानियाँ सफल है।
* कथानक में विविधता, प्रेरणादायी चरित्र-चित्रण, रोचक संवाद, भाषा एवं शैली के विभिन्न प्रयोग और विविधांगी उद्देश्य पूर्ति में सफलता ये सूर्यबाला जी की कहानियों के शिल्प की विशेषता है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोध प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले गुरूजनों हितचिंतकों एवं आत्मियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

यह लघु-शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. शिवाजी निकम जी के प्रेरणादायी निर्देशन का फल है। उनके प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा स्नेह के कारण यह कार्य पूर्ण हो पाया है। अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी उन्होंने मेरे अनुसंधान कार्य को निरंतर गतिशील बनाए रखा। उन्होंने मेरी अस्मिता को जो ज्ञान-दृष्टि दी, अगर मैं उसे जीवन में सजग रख सका तो वह उनके प्रति मेरा आभार-प्रदर्शन होगा।

श्रद्धेय सूर्यबाला जी का भी इस कार्य में अमूल्य योगदान रहा है। अपने आत्मीय व्यवहार से मुझे जीत लिया। निरंतर पत्रों द्वारा उन्होंने मेरा मार्गदर्शन भी किया। मैं उनका सदैव ऋणी रहूँगा।

आदरणीय गुरूवर्य डॉ. पांडुरंग पाटील, डॉ. वसंत मोरे, डॉ. अर्जून चव्हाण, प्राचार्य सुहास साळुंखे (कराड), प्राचार्य बापूसाहेब माने (कापशी) प्रा. बी. डी. कदम आदि का समय-समय पर प्राप्त मार्गदर्शन मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ाता रहा। इन सभी का मैं आभारी हूँ।

इस शोध-प्रबंध की पूर्णता में मेरी माता श्रीमती सुशिलादेवी, पिता श्री. बापूसाहेब, भाई हेमंत तथा बड़ी बहन सौ. अल्का घोटणे, जीजाजी श्री. प्रदीप घोटणे इन सभी का श्रेय है, जिन्होंने पारिवारिक चिंताओं से मुक्त रखकर मुझे प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर मेरी जीवनसंगीनी सौ. माधवी और बेटी सोनाली एवं बेटा स्वरूप को कैसे भूल सकता हूँ, जिनके मौन तप का मूल्य मेरे लिए शब्दातीत है।

मेरे मित्र परिवार के सदस्य डॉ. भारत कुचेकर, प्रा. सौ. अपर्णा कुचेकर, अशोक बाचुळकर, गिरीश काड्रिाद, मिलिंद साळवे, अमोल कासार आदि की भी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मुझे निरंतर मिलता रहा। अत: मैं उनका भी आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक पुस्तकें शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर, श्री संत गाडगेबाबा महाविद्यालय वारणा-कापशी (कोल्हापूर), मुंबई विश्वविद्यालय,मुंबई के ग्रंथालयों से प्राप्त हो सकी है। उन सभी ग्रंथपालों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

इस प्रबंध का सुंदर रूप में टंकन करनेवाले, श्री. अल्ताफ मोमीन (वर्षानगर कोल्हापूर) का भी मैं आभारी हूँ।

अंत में सभी गुरूजनों, सहृदयों एवं आत्मजनों की प्रेरणा तथा सदिच्छाओं के लिए पुनश्च धन्यवाद।